“अनूपलाल मंडल के औपन्यासिक साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन” (कुछ प्रमुख उपन्यासों के सन्दर्भ में)

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) उमेश कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञा :

सरिता कुमारी
पिता– रघुनन्दन राम
ग्राम– दुधैल, पो०– रघौली,
थाना– बिस्फी, प्रखण्ड– बिस्फी
जिला– मधुबनी (बिहार)

प्रस्तावित विषय–

अनुपलाल मंडल के औपन्यासिक साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

जिस समय प्रेमचंद हिन्दी कथा–साहित्य का शिखर बना रहे थे, उस समय अनूपलाल का आगमन एक उभरते हुए कथाकार के रूप में हुआ। अनूपजी की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति वैसी ही थी जैसी गोपाल सिंह नेपाली की थी। अनूप जी ने केवल कहानियाँ और उपन्यास ही नहीं लिखा बल्कि धर्म और अध्यात्म पर भी लिखा। वे हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, बांग्ला, उर्दू और फारसी के भी अच्छे जानकार थे। भले उनकी औपचारिक शिक्षा मैथिली शरण गुप्त से भी कम थी लेकिन ज्ञान–पिपासा और अध्यावसाय के कारण विद्वता के शिखर पर स्थापित हो गये। वे अपनी कारयित्री प्रतिभा के कारण बिकानेर में कॉलेज प्राध्यापक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आचार्य शिवपूजन सहाय ने उनके प्रतिभा को समझा और उन्हें 'बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्' का प्रकाशनाधिकारी बनाया। सेवा–निवृत्ति के बाद वे अपने गाँव लौट गए और धीरे–धीरे लोगों ने उन्हें विस्मृत कर दिया।

अनूप जी का प्रथम प्रकाशित उपन्यास 'निर्वासिता' है और अंतिम विपुलकाय उपन्यास 'उत्तर पुरुष' है जिसका प्रकशन (1962) ई० में राधा-कृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित हुआ था। कई विद्वानों ने इस उपन्यास की समीक्षा भी की हैं। अनूप जी ने अपनी क्षेत्रीय लोक–भाषा अंगिका में भी एक उपन्यास लिखा 'नया सुरुज नया चान'।

अनूप जी को जनपद का कथाकार माना जाता है। कहा जाता है कि फणीश्वर नाथ रेणु के पिता शिलानाथ मंडल और अनूप जी में गहरी आत्मीयता थी। इस कारण अनूप जी रेणु के पिता तुल्य थे और इसी अधिकार से वे रेणु को कई तरह के नसीहतें भी दिया करते थे।

(प्रसंग 'पतझर' नामक लघु–पत्रिका संपादक, नरेन्द्र घायल, पटना 1967–1968 में अनूप जी से लिया गया इन्टरव्यू) रेणु जी ने जिस साहित्यिक चेतना को स्थापित किया उसमें अनूप जी का महत्वपूर्ण योगदान है। एक संस्मरण से पता चलता है कि जब 'राष्ट्रभाषा परिषद्' से मैंला आँचल की हस्त लिखित पाण्डुलिपि को अनूप जी ने टंकित करबा कर उसे छपवाया था तब उसकी पहली प्रति लेकर रेणु जी अनूप जी के पास गये थे।

तत्कालीन साहित्यकारों ने अनूप जी को बिहार का 'प्रेमचंद' कह दिया था। जिसके कारण उनकी प्रतिष्ठा तो बढ़ी लेकिन अनूप जी का उन्मेष (1929) में हुआ था। उस समय प्रेमचंद कथा-साहित्य के एक विशिष्ट लेखक के रूप में स्थापित हो चुके थे। इन दोनों के लेखन में सामाजिक भिन्नताएँ थी।

"भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी नवजागरण की जहाँ तक बात है, प्रेमचन्द और अनूपलाल मंडल में समानता खोजी जा सकती है। लेकिन सिर्फ इतने से अनूप जी बिहार के प्रेमचंद नहीं हो जाते। जन्मजात किसान होकर भी अनूप जी मुंशी प्रेमचंद की तरह किसानों के लेखक नहीं थे। अनूप जी में प्रेमचंद की वर्ग–दृष्टि भी नहीं थी। यर्थाथवादी लेखक होते हुए भी अनूप जी में आलोचनात्मक यर्थाथवाद की तुलना में रोमांटिक यर्थाथ अधिक था। निष्कर्षतः वे सामाजिक यर्थात् में सात्विक क्रांति के प्रवक्ता थे।"

(परिषद् पत्रिका–अनूपलाल मंडल अंक,बिहार राष्ट्र–भाषा परिषद, पटना, संपादकीय, पृ० सं० 7)

अनुपलाल मंडल का एक वृहद रचना संसार हैं। इन्होनें 20 उपन्यासों की रचना की। इसका रचनाकाल 1929 से लेकर 1987 तक है जिसमें निर्वासिता (1929), समाज की वेदी पर (1930), साकी (1931), ज्योतिर्मयी (1933), रूपरेखा (1934), सविता (1935), मीमांसा (1937), वे अभागे (1937), दस बीघा जमीन (1941), ज्वाला (1941), आवारों की

दुनिया (1945), दर्द की तस्वीरें (1945), बुझने न पाएँ (1946), रक्त और रंग (1955), अभियान पथ (1955), अन्नपूर्णा (1957), केन्द्र और परिधि (1957), तूफान और तिनके (1960), उत्तर पुरुष (1970), नया सूरज नया चाँद (1987)। इसके अलावा प्रथम कहानी पत्रात्मक शैली में 'आत्म–मर्यादा' के रूप में प्रकाशित हुई।

उन्होंने उपनिषदों की कथाएँ तथा अरविंद, महर्षि रमण, रघुवंश प्रसाद सिंह, व्यक्तित्व और कृतित्व, मुसोलीनी का बचपन आदि महान व्यक्तित्व का जीवन–चरित भी प्रस्तुत किया है।

अनूपलाल मंडल एक महान और सुघर कथाकार और साहित्यकार थे। उनकी सुधा, गध मानस, पंचामृत, काव्य अलंकार प्रवेशिका आदि प्रमुख हैं। उन्होंने 'नीति–शास्त्र' एवं 'शेष पाण्डुलिपि' का बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद किया। 'गरीबी के दिन' उपन्यास का अनुवाद उन्होंने अंग्रेजी से हिन्दी में किया, जिसका प्रकाशन 1931 ई में नागरी प्रकाशन लिमिटेड, पटना–4 से हुआ था।

अनूपलाल मंडल की कुछ रचनाएँ अप्रकाशित रहीं, जिसमें सुभा उपन्यास तथा 'और कितनी दूर है मंजिल' आत्मकथा प्रमुख है। परन्तु अब दोनों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। शोध करने के क्रम उनके 'साकी', 'ज्योतिर्मयी' (1993 ई०), 'अभियान के पथ', 'दर्द की तस्तीरें'(1945 ई०), 'केन्द्र और परिधि'(1957 ई०), 'तूफान और तिनके', 'उत्तर पुरुष'(1970 ई०), 'नया सूरज नया चाँद'(1987 ई०), 'तूफान और तिनके' (1960 ई०), रक्र और रंग (1955 ई०), 'बुझने न पाये' (1945 ई०) आदि उपन्यासों के आलोक में ही शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत किया जायेगा।

इस प्रकार देखा जाए तो अनूपलाल मंडल एक सफल उपन्यासकार, कहानीकार एवं अनुवादक के रूप में भी हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं।

अनूपलाल मंडल जी के रचना–संसार को देखते हुए डॉ० श्री रंजन सूरिदेव ने लिखा– “प्रख्यात कथाकोविद् मण्डलानी महर्षि अरविंद के सिद्धातों के पोषक तथा बँगला कथा–साहित्य के अभिनिष्ट स्वध्यायी थे। इसलिए उनके कथा–चिंतन में सहज ही अरविंद की दार्शनिक चितांधारा की छाप परिलक्षित होती है और दार्शनिक चिंताधारा की शिल्प में बँगला–कथाकारों विशेषतः शरतचन्द की रूप–चेतना की आवृत्ति उपलब्ध होती है, इस संदर्भ में चिंतन प्रधान कथा सृष्टि की दृष्टि जो उनके कथाकार–जीवन का अंतिम उपन्यास ‘उत्तर पुरुष’ तथा बंगला कथा–शिल्प के पुनराख्यान की दृष्टि से महत्वपूर्ण कथा कृतियों में ‘मीमांशा’, ‘दस बीघा जमीन’, ‘निर्वासिता’, ‘रक्त और रंग’, ‘तूफान और तिनके’ (इस उपन्यास का यह नामकरण मैंने ही सुझाया था, जिसे उन्होंने स्वीकार कर मुझे अकारण गौरव–पुलकित किया था।) ‘वे अभागे’ आदि परिगणनीय हैं। ज्ञातव्य है, सिनेमा–जगत के प्रसिद्ध अभिनेता एवं निर्माता निर्देशक, श्री किशोर साहू ने उनकी औपन्यासिक कृति ‘मीमांसा’ का ‘बहुरानी’ के नाम से चलचित्रांकित किया था। 21 सितम्बर 1982 को अनूपलाल जी के निधन पर डॉ० रंजन सूरिदेव ने अपनी श्रद्धा निवेदित करते हुए कहा था, मंडल जी विशिष्ट कथा–साधक संघर्ष–जीवी कथाकारों में पांक्तेय तथा कालजयी कथाकार प्रेमचंद की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कथा–धारा का निर्वाहक थे।

अनूपलाल मंडल ने अपनी ‘आत्मकथा’ भी लिखकर अपने व्यक्तित्व के संदर्भ में अपने आप को उपस्थित किया है। उनकी आत्मकथा 2021 में साहित्यसदन, दिल्ली से ‘मंजिल और कितनी दूर’ के नाम से प्रकाशित हुई है। इसके अलावा कथा–साहित्य की बात करें तो फणीश्वरनाथ रेणु और प्रेमचंद की तरह अनूपलाल जी लोक–भाषा और आंचलिकता के समर्थक थे। साथ ही अंगीका से भी उन्हें प्रेम था। वासुदेव नारायण आलोक ने यह माना है कि “अनूपलाल

मंडल जी घर–परिवार के कथाकार थें क्योंकि इनकी रचनाओं का संसार अलग है। उनके उपन्यासों में न राजनीति की विसंगतियों है और न विडम्बनाओं का चित्रण हुआ हैं बल्कि उनके उपन्यास विशुद्ध सामाजिक हैं क्योंकि उनके उपन्यासों में मध्य–वर्गीय परिवार की जीवन–शैली और पारिवारिक संदर्भों एवं समस्याओं का चित्रण किया गया है। इनका ज्योंतिर्मयी उपन्यास पारिवारिक संबधों में आत्मीयता एवं समाज में सहज मानवीयता देखी जा सकती है। इनकी मानवीयता में आपसी प्रेम–सौहार्द, ममता, करुणा आदि सदगुणों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति साकार होती दिखाई देती है।”

निर्वासिता (1929)– यह उपन्यास ‘अन्नपूर्णा’ नाम से भी जाना जाता है। वैसे इसका प्रकाशन ‘कला निकेतन’ पटना से 1959ई० में हुआ। मंडल जी का यह पहला उपन्यास है। लेकिन लेखक स्वयं लिखते हैं– “यह मेरा सर्वप्रथम उपन्यास ‘निर्वासिता’ के नाम से सन् 1929ई० में प्रकाशित हुआ था। और उस समय इसकी अच्छी प्रतिष्ठा रही थी। इसका यह परिमर्जित संस्करण ‘अन्नपूर्णा’ के नाम से बहुत लम्बी–लम्बी अवधि के बाद प्रकाशित हो रहा है। इस संस्करण में प्रारंभिक और अंतिम अंशों को नए सिरे से लिखा गया है और बीच–बीच में यत्र–तत्र आवश्यकतानुसार किंचित परिवर्तन–परिवर्धान भी किया गया है।” (अनूपलाल मंडल, ‘अन्नपूर्णा’, निवेदन पृ० 7)

समाज की वेदी पर (1930)– इस उपन्यास में एक संत्रस्त वेश्या–पुत्री की कोमल हृदय की उदात्त भावनाओं, उत्कृष्ट प्रेम और बलिदान की गौरवमयी गाथा अभिव्यक्त की गई है, जो समाज की बलि वेदी पर अपना बहुमूल्य जीवन उत्सर्ग करनेवाले एक देश चक्र प्राध्यापक की चिरसंगिनी बनकर अपने सतीत्व का उज्जवल दृष्टांत प्रस्तुत करती है। यह एक दुखान्त उपन्यास है। (पृ० 108)

साकी (1931)– में एक दलित स्त्री की कहानी है जो सामंत का घर–परिवार पर जमीन बचाने हेतु अपना प्यार एवं सम्पति सबकुछ न्योछावर करके अपने अस्तित्व का एहसास करा देती है। साकी के प्रथम संस्करण की भूमिका में लेखक अनूपलाल जी लिखते हैं– "पतिता का भी हृदय होता है। फिर क्यों वह दुत्कारी जाती है। क्यों समाज उसे बहिष्कृत, त्याग और नगण्य समझता है?" उपन्यासकार में एक स्त्री की पीड़ा को व्यक्त किया गया है। इसे सामाजिक उपन्यास कहा गया है।

'दर्द की तस्वीरे' (1945)– पत्र–शैली में लिखा उपन्यास हैं। इसमें मंडल जी ने उर्दू के शब्दों का अधिक प्रयोग किया है। 'दर्द की तस्वीरे' में एक पिता की अपनी संतान के लिए मोह–ममता से भरी–तस्वीरों का अंबार सा लगता हैं। इस उपन्यास के पात्र धनपत पर गरीबी और भूखमरी का पहाड़ टूट पड़ता है। जिसकी चोट में सबसे पहले तो उसकी बीबी ही कज़ा के हाथों का खिलौना बन गयी। बूढ़े बाप की रोटियों के टुकड़ों का हकदार बनने से इन्कार कर उसकी चौदह वर्षीय बेटी यमुना एक दिन घर से चुपके निकल जाती हैं। इनकी याद में अपने बेटे–बेटी की दर्द भरी तस्वीरें लिए हुए जो दिल्ली के अपने दिली दोस्तों को मौके–बेमौका दिखलाया करता हैं। अब उसकी एक ही तमन्ना रह गयी है कि जिंदगी के किसी भी मोड़ पर उसके जिगड़ के दोनों टुकड़ो की झाँकी उसे मयस्सर हो जाए तब उसे मर जाने का तनिक भी मलाल नहीं होगा। इसमें एक पिता की अपनी संतान के लिए मोह–ममता से भरी तस्वीरों का अंवार सा लगता है।

अनुपलाल मण्डल के उपन्यासों में कई तरह की कथाओं का मिश्रण मिलता हैं। जैसे 'अन्नपूर्णा' (1929) उपन्यास में बेमेल विवाह के दुष्परिणाम दिखाया गया है। 'मीमांसा' (1937) में अवैध संबंध एवं संतान की सामाजिक मान्यता के औचित्य को दर्शाया गया है। 'वे अभागे' (1937) में यौन–भावना से पीड़ित अभागे के जीवन में परिवर्तन के संकेत दृष्टि–गोचर होते हैं। उपन्यास में अनेक तरह की प्रवृतियाँ उभर कर आती है।

'ज्योतिर्मयी'(1933) उपन्यासों में संयुक्त परिवार के टूटने और बिखरने से त्रासदी देखी जा सकती है। गाँव की समस्या एवं उन्नति की प्रेरणा से संबंधित उपन्यास है। 'अभियान के पथ' (1955) में गाँव की समस्याओं को सामने रखकर गाँव की उन्नति की प्रेरणा दी गई है। 'दर्द की तस्वीरें' (1945) में राष्ट्रीयता की भावना देखी जा सकती है। क्रान्ति–भावना से प्रेरित उनका उपन्यास 'बुझने न पाये' (1946) हैं। अनूप जी के इस राष्ट्रवादी अप्पर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास में स्वतंत्रता आन्दोलन की ज्वाला तो है ही, साथ ही देश–प्रेम के लिए हंसते–हंसते प्राण न्योछावर करने की होड़ लगी है। नारियाँ भी इस क्रांति यज्ञ में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही है। 'रक्त और रंग' (1955) में मानवीय आदिम संबधों के परख की गई हैं। 'केन्द्र और परिधि' (1957) में पति–पत्नी के संबधों के बनने बिगरने के सूत्र देखे जा सकते हैं। 'तूफान और तिनकें' (1960) में अदम्य जीजिविषा की कथा व्यक्त हुई हैं। 'उत्तर पुरुष'(1970) में परिवार का उत्तर पुरुष विपरीत परिस्थितियों से जूझता नजर आता हैं। 'नया सूरज : नया चाँद' का प्रकाशन (189) में हुआ। अनूप जी का यह अंतिम उपन्यास है जो अंगिका में लिखा गया है। बाद में इसका हिन्दीकरण भी हुआ। इसमें अर्न्तजातीय विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण विषय का आलंबन लेकर बड़ा ही रोचक ढंग से लिखा गया है।

अनूपलाल मंडल के उपन्यासों के लेखन में सामाजिक भावना, स्वदेशी भावना, आदर्शवाद, यर्थाथवाद, आदर्शोमुख यर्थाथवाद, नारी मनोविज्ञान, राष्ट्रीय–भावना, सामाजिक जागरण आदि विषयों को देखा जा सकता है।

"अनूपलाल मण्डल के उपन्यासों में रूपों की विविधता निरंतर दिखलाई पड़ती है। आत्मा–कथन पत्रात्मक शैली के साथ पूर्व दीप्ति (फ्लैश बैक) का सफल प्रयोग यहाँ मिलता है। शिल्प और अन्तर्वस्तु के अन्तर्सम्बंधों ने उपनयासों को रोचक तथा पठनीय बना दिया

है।.....अनूपलाल मण्डल के उपन्यासों की अन्तर्वस्तु ने निरन्तर नये शिल्प की तलाश की है। इन उपन्यासों में मानवीय अनुभूतियों एवं अनुभवों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति हुई है।

(आलेख–साहित्येतिहास के अंधेरे में एक दहकता हुआ सूरज– सुरेन्द्र स्निग्ध, परिषद् पत्रिका, अप्रैल– 95–96 मार्च वर्ष– 35 अंक–1–4, पृ० 77–78)

ईषत् खामियों के साथ राहुल सांकृत्यायन ने मंडल जी के बारे में लिखा– "उपन्यास तो आप सुन्दर लिख लेते है, आपकी भाषा मजी हुई हैं संस्कृत शब्दों का ज्ञान भी अच्छा हैं। कथोपकथन भी सुन्दर होते है। पर भाई मुझे एक बात आपकी बिल्कुल नापसंद लगी और वह यह कि आपके पात्र में मर्दानापन नहीं झलकता। मस्त होकर लिखों, मगर सोच समझकर लिखो देखोंगे कमी न रह पायगी। चीज–चोखी उतरेगी।"

अनूपलाल मंडल के उपन्यासों में वर्णित समाज की तत्कालीन परिस्थितियों और संवेदनशीलता के दर्शन होते हैं। इस बीच पारिवारिक संबधों में आत्मीयता एवं मानवीय मूल्यों की झाँकी सहज ही दिखाई पड़ती हैं।

अनूपलाल मंडल जी नाटक, संगीत और वाद्ययंत्रों में भी अभिरुचि रखते थे। साथ ही एक अच्छे अनुवादक भी थे, क्योंकि अंग्रेजी एवं बँगला भाषा पर भी उन्हें अधिकार था। बंगला में नीति–शास्त्र का अनुवाद उन्होंने हिन्दी में किया था। उन्होंने 'गरीबी के दिन' उपन्यास का अनुवाद अंग्रेजी से हिन्दी में किया था। इस प्रकार देखा जाए तो अनूपलाल मंडल हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थें। वे जीवन पर्यन्त साहित्य–सृजन में लगे रहें। उनकी साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन सही ढंग से नहीं हो पाया है। यों कहिए कि इतने परिश्रमी कथाकार साहित्यकार केवल अपनी रचनाओं तक ही सीमित रह गये। उनकी रचनाओं की समीक्षा भी नहीं हो पाई है।

प्रस्तावित विषय पर शोध की आवश्यकता–

अनूपलाल मंडल एक ऐसे साहित्यकार है जिसकी रचनाओं में वर्णित विचारों के अधिकतर समीक्षकों के सामने रखा ही नहीं गया। जबकि 1928 से 1978 तक छोटे-बड़े प्रकाशनों से उनके 20 उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे। उक्त उपन्यासों की पूरी तरह समीक्षा नहीं हो पाइ्र है। अनूप जी जीवन–पर्यंत लिखते रहे लेकिन उनकी रचनाएँ अर्थाभाव में मुश्किल से प्रकाशित होती रही है। आज भी उनकी कुछ रचनाएँ अप्रकाशित है। लेकिन जो उपलब्ध है उस पर समीक्षा होना अनिवार्य है।

शोध के स्रोत–

अनूपलाल मंडल के रचना संसार को जानने समझने के लिए सर्व–प्रथम उनकी रचनाएँ जो विभिन्न प्रकाशकों से प्रकाशित है उसे एकत्र करने की आवश्यकता है। साथ ही अनूपलाल मंडल पर विचार करने वाले डॉ० श्री रंजन सूरिदेव, काशीनाथ पाण्डेय, डाँ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० चन्द नारायण सिंह, आनंदी प्रसाद ठाकुर डॉ० मधुकर गंगाधर, डॉ० खगेन्द्र ठाकुर, प्रो० राम बुझावन सिंह, डॉ० मृत्युंजय उपाध्याय आदि दर्जनभर लेखकों ने अनूपलाल मंडल के संबंध में लिखा है। उनके विचारों का अध्ययन आवश्यक होगा। विशेष ग्रंथ के रुप में “बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्”, पटना द्वारा प्रकाशित परिषद् पत्रिका (दिसम्बर 1998 संयुक्तांक–137–140) का भी अवलोकन और अध्ययन आवश्यक होगा। इसके अलावे उनके जानने वालों से साक्षात्कार की भी आवश्यकता होगी ताकि उनके व्यक्तित्व और उनके कर्तृत्व के बारे में जानकारी मिल सके।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा–

प्रस्तावित 'शोध–प्रबंध' के विषय से संबंधित कोई सार्थक पुस्तक उपलब्ध नहीं है इसलिए अनूपलाल मंडल से पूर्व के साहित्यकारों की साहित्यिक उपलब्धियों को सामने रखा जा सकता है। अनूपलाल मंडल के कथा साहित्य के अध्ययन की पृष्ठभूमि यही हो सकती है। प्रेमचंद तक जितनी भी कृतियाँ रची गईं वह सब आदर्शोंमुखी यर्थाथवादी रचना धर्मिता से जुड़ी रही लेकिन अनूपलाल मंडल की रचनाएँ (कथा–साहित्य) आदर्श से ऊपर उठकर जिस यर्थाथ का सामाना करती है उसकी समीक्षा आवश्यक होगी।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तावित शोध–प्रबंध को सुचारू रूप से प्रस्तुत करने के लिए शोधार्थी का यह उद्देश्य होगा कि वह प्रेमचंद कालीन साहित्य का अध्ययन कर अनूपलाल मंडल की कृतियों पर अपना मंतव्य प्रस्तुत करें। साथ ही तत्कालीन–समाज और उनकी समस्याओं का अध्ययन भी अपेक्षित है। शोधार्थी का कर्तव्य होगा कि ईमानदारी पूर्वक सामग्री–संचयन कर अपनी शोध प्रक्रिया से जुड़े रहें।

शोधार्थी का यह भी उद्देश्य होगा कि वह परीक्षण, मूल्यांकन और शोध–निष्कर्षों की स्थापना के लिए शोध–प्रविधि के दोनों कारकों का उपयोग कर शोध की मौलिकता भी बरकरार रखें। आगमन–पद्धति द्वारा वृहत्तर तथ्यों का संकलन और अनुशीलन किया जायेगा तथा निगमन पद्धति से मंथन के पश्चात शोध–निष्कर्षों की स्थापना की जायेंगी।

शोध की सीमा–

हिन्दी साहित्य के कथा–साहित्य और अनूपलाल मंडल के योगदान तक ही शोध के विषयानुरूप तथ्यों के सामने रखा जाएगा। परन्तु उनके तथ्यों की पुष्टि के लिए तत्कालीन साहित्यकारों के विचारों को भी प्रस्तुत करने का प्रावधान रहेगा। कुल मिलाकर अनूपलाल मंडल की रचनाधर्मिता को ही केंद्र में रखा जायेगा। किसी भी शोध की सीमा निर्धारित करने के लिए उसकी पृष्टभूमि पर विमर्श अवश्य किया जाता है ताकि शोध–कार्य के विषय को बल मिल सकें।

शोध–कार्य के आधार ग्रंथः–

1) निर्वासिता – चाँद प्रेस, इलाहाबाद, 1929

2) समाज की वेदी पर – युगान्तर साहित्य मंदिर भागलपुर सिटी भागलपुर, 1930

3) साकी – श्री अजनता प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4, प्रकाशन– 1931

4) ज्योतिर्मयी – कला निकेतन, पटना–4, 1933

5) रुपरेखा– श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4, 1934

6) सविता– श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4, 1935

7) मीमांसा– हिन्दी प्रचार पुस्तकालय, पिशाच मोचन, वारणसी–1, 1937

8) वे अभागें– श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4, 1937

9) दस बीघा– युगान्तर साहित्य मंदिर, भागलपुर, 1941

10) ज्वाला– तिलक भंडार, भागलपुर, 1941

11) आवारों की दुनिया– युगान्तर साहित्य मंदिर, भागलपुर सिटी, 1945

12) दर्द की तस्वीरें– युगान्तर साहित्य मंदिर, भागलपुर सिटी, 1945

13) बुझने न पाये– युगान्तर साहित्य मंदिर, भागलपुर सिटी, 1946

14) अन्नपूर्णा– कला निकेतन, पटना–4, 1957

15) रक्त और रंग– ज्ञानपीठ लिमिटेड पटना–4, 1955

16) अभियान का पथ– ग्रंथ माला कार्यालय पटना, 1955

17) केन्द्र और परिधि– पराग प्रकाशन पटना–4, 1957

18) तूफान और तिनके– साहित्य कला मंदिर, कुरसेला, 1960

19) उत्तर पुरुष– राधाकृष्ण प्रकाशन, दरिया गंज दिल्ली, 1970

20) नया सूरज नया चाँद– शेखर प्रकाशन, बोरिंगरोड पटना, 1987

शोध कार्य के सहायक ग्रंथः–

1) हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

2) हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ० नगेन्द्र

3) हिन्दी साहितय का दूसरा इतिहास– डॉ० बच्चन सिंह

4) हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास– डॉ० रामस्वरुप चतुर्वेदी

5) हिन्दी साहित्य कोश भाग–1 तथा भाग–2– डॉ० धीरेन्द्र वर्मा

6) हिन्दी उपन्यास–डॉ० शिवनारायण श्रीवास्तव

7) हिन्दी कहानी का इतिहास– गोपाल राय

8) परिधि पर स्त्री– मृणाल पाण्डेय

9) नारीत्व– शान्ति कुमार स्याल

10) जीना है तो लड़ना होगा– वृंदा करात

11) भारतीय महिलाएँ दशा और दिशा– सुभाष शर्मा

पत्रिकाएँः–

1) परिषद्–पत्रिका, संयुक्तांक– 137–140, प्रकाशन– दिसम्बर 1998, प्रधान संपादक– डॉ० रामधारी सिंह दिवाकर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना– 800004

2) आजकल– सीमा ओझा

3) वागर्थ– शंभुनाथ

4) हंस–संजय– संजय सहाय

5) कथा देश– हरिनारायण

6) नया ज्ञानोदय– लीलाधर मंगलोई

प्रस्तावित अध्याय–

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय –	अनूपलाल मण्डल का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व i) पृष्ठभूमि, ii) जीवन चरित, iii) उपन्यास, iv) कहानियाँ, v) अनुवाद, vi) अन्य कृतियाँ
द्वितीय अध्याय –	अनूपलाल मण्डल की औपन्यासिक कृतियाँ।
तृतीय अध्याय –	अनूपलाल मण्डल के उपन्यासों में समाज का स्वरुप
चतुर्थ अध्याय –	अनूपलाल मण्डल के उपन्यासों में परिवार का स्वरुप
पंचम अध्याय –	अनूपलाल मंडल के उपन्यासों में राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना
षष्ठ अध्याय –	अनूप लाल मण्डल के उपन्यासों में देश–भक्ति
सप्तम अध्याय –	अनूपलाल मण्डल के उपन्यासों की भाषा–शैली

उपसंहार

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) उमेश कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञा :

सरिता कुमारी
पिता– रघुनन्दन राम
ग्राम– दुधैल, पो० रघौली,
थाना– बिस्फी, प्रखण्ड– बिस्फी
जिला– मधुबनी (बिहार)